बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली ११००३४

हिंदी

कक्षा-नवीं

रैदास

E-Lesson_4

प्रिय विद्यार्थियो !

आज हम **स्पर्श भाग -१** के पद्य खंड से कवि रैदास के विषय में पढ़ेंगे।

अधिक जानकारी के लिए ---

https://www.youtube.com/watch?v=h91OVN5VuTQ

रैदास (पाठ-7) ⬇
https://drive.google.com/open?id=1NqzkCwHl_rw2vBQSYQLQwmz_n8lU1R0e

पद का सारांश कुछ इसप्रकार है -

रैदास संत प्रकृति के कवि हैं। वे ईश्वर को अपने ह्रदय में विद्यमान मानते हैं। वे इस निराकार तक पहुँचने का एक ही उपाय सुझाते हैं ईश्वर की भक्ति ,उस पर भरोसा। उन्होंने प्रथम पद "अब कैसे छूटे नाम रट लागी "में अपने ईश्वर को याद करते हुए उन से अपनी तुलना की है। वे स्वीकार करते हैं कि उन का प्रभु चंदन है तो वे स्वयं पानी हैं इसलिए उन के अंग -अंग में उस की गंध _समाई हुई है। उन का प्रभु वर्षा से भरा हुआ घना बादल है तो वे स्वयं मोर हैं। वे उस की ओर ठीक उसी तरह निहार रहे हैं जैसे चकोर बादलों को निहारता है। उन का प्रभु दीपक है तो वे स्वयं वह बाती हैं जो उन्हीं के प्रकाश के सहारे दिन - रात जल रही है।उनका प्रभु यदि मोती हैतो वे वह धागा हैं जिसमें वह मोती

BBPS.PITAMPURA

पिरोया हुआ है। उन का यह मेल सोने में सुहागे की तरह है। उनका प्रभु स्वामी है तो वे उसके दास हैं। रैदास के प्रभु किसी मंदिर मस्जिद में नहीं विराजते वरन उनके हृदय में सदा विराजमान रहते हैं।

पद्यांश को पढ़कर दिए गए विकल्पों में से सही को चुनकर लिखिए तथा दिए गए प्रश्नों के भी संक्षिप्त उत्तर लिखिए।

१

अब कैसे छूटे नाम रट लागी।
प्रभु जी ,तुम चंदन हम पानी ,जाकी अँग -अँग बास समानी।
प्रभु जी ,तुम घन वन हम मोरा ,जैसे चितवत चंद चकोरा
प्रभु जी ,तुम दीपक हम बाती ,जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी ,तुम मोती हम धागा ,जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी ,तुम स्वामी हम दासा ,ऐसी भक्ति करै रैदासा।

शब्द	**अर्थ**
बास	सुगंध
समानी	समाई हुई ,बसी हुई
घन	बादल
चकोरा	एक पक्षी ,जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है
बन	जंगल
बरै	जलना
स्वामी	मालिक
दास	नौकर

BBPS PITAMPURA

नोट: उपर्युक्त पद की प्रत्येक पंक्ति का संक्षिप्त अर्थ -

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।

राम का नाम लेने की लत लग गई है ,वह कभी नहीं छूटेगी क्योंकि प्रभु राम का नाम उनके अंग -अंग में समाया है।

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी ,जाकी अंग -अंग बास समानी।

हे प्रभु ,तुम चंदन के समान हो और मैं पानी हूँ। चंदन के कण -कण में जो सुगंध होती है उसके साथ रहने से वह मुझ जल में भी समा गई अर्थात प्रभु की भक्ति मेरे रोम -रोम में समा गई है।

प्रभु जी तुम घन वन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा।

हे प्रभु, तुम वर्षा के पानी से भरे घने बादल हो और मैं मोर हूँ। मैं तुम्हारी ओर ठीक उसी प्रकार देखता हूँ जैसे चन्द्रमा का प्रेमी चकोर पक्षी उसे निहारता रहता है। जैसे घने बादलों को देख मोर नाचने लगता है ठीक उसीप्रकार तुम्हे पाकर मेरा मन भी तुम्हारी भक्ति में लीन हो गया है।

प्रभु जी ,तुम दीपक हम बाती ,जाकी जोति बरै दिन राति।

हे प्रभु ,तुम दीपक हो और मैं उसमें लगी हुई बत्ती के समान हूँ। वह तुम्हीं हो जो मुझमें प्रकाश बनकर रात -दिन उजाला कर रहे हो।

प्रभु जी ,तुम मोती हम धागा ,जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।

हे प्रभु ,तुम मोती के समान और मैं धागे के समान हूँ। जैसे सोने में सुहागा मिलने से उसकी चमक बढ़ जाती है जिससे उसकी पहचान करने में आसानी होती है ठीक उसीप्रकार मोती के धागे में पिरोये जाने से मुझ तुच्छ धागे की कीमत भी बढ़ गई है।

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा ,ऐसी भक्ति करै रैदासा।

हे प्रभु ,तुम मालिक हो और मैं तुम्हारे नौकर के समान हूँ जैसे नौकर अपने मालिक की सेवा करता है रैदास कवि अपने प्रभु की ऐसी ही भक्ति करना चाहते हैं ,पूरी तरह प्रभु के प्रति समर्पित होना चाहते हैं।

DDE PITAMPURA

प्रश्न -विकल्प सहित

क)प्रस्तुत पद की रचना किसने की है ?

i.कबीर ii.रैदास iii.मीराबाई iv.रहीम

ख)कवि को किस के नाम की रट लग गई है?

i. ब्रह्म देव ii.विष्णु iii.राम iv.प्रभु

ग)प्रस्तुत पद में बास का क्या अर्थ है ?

i.बासी ii.दुर्गंध iii.सुगंध iv.गंध

घ)प्रस्तुत पद में घन का क्या अर्थ है ?

i.आसमान ii.घना iii.हथौड़ा iv.बादल

ड)प्रस्तुत पद में समानी का क्या अर्थ है ?

i.तुलना करना ii. समान iii.समाई हुई iv.घृणा करना

निम्न प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए -

क)अगर प्रभु मोती है तो कवि क्या है ?

ख)प्रस्तुत पद में चकोरकिस के लिए प्रयोग हुआ है ?

ग)कवि ने ईश्वर को स्वामी तो स्वयं को क्या कहा है ?

घ)कवि बाती है तो ईश्वर कौन है ?

ड़)सोने में चमक बढ़ाने के लिए किसे मिलाया जाता है ?

BBPS,PITAMPURA

BBPS,PITAMPURA